कर्मयोग

Dr. Ram Kishore
Assistant Professor (Yoga)
School of Health Sciences
CSJM University, Kanpur

कर्म शब्द का अर्थ

Meaning of Karma

कर्म शब्द की उत्पत्ति 'कृ' धातु से हुई है। जिसका अर्थ है – करना।

सामान्य अर्थों में कर्म शब्द का तात्पर्य क्रिया, कृत्य, कार्य करना आदि।

कर्मयोग की परिभाषा

Definition of Karmayoga

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृत दुष्कृते। तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कोशलम्।।

श्रीमद्भगवद्गीता 2.50

र्थात् समबुद्धि से युक्त पुरूष पाप और पुण्य दोनों को इसी लोक में त्याग देता है या मुक्त हो जाता है। ः तू समत्व रूपी योग में लग जा। यही समत्वरूपी योग ही कर्मों में कुशलता है। यही एक मात्र बन्धन काटने का उपाय है।

कर्म कर्तव्यमित्येव विहितेष्वेव कर्मसु। बन्धनं मनसो नित्यं कर्मयोगः स उच्च्यते।।

त्रिशिखब्राह्मणोपनिषद्

र्थात् विहित कर्म में इस बुद्धि का होना कि यह कर्तव्य कर्म है, मनका ऐसा नित्य बन्धन होना कर्मयोग है।

वैदिक ग्रन्थों के अनुसार कर्म के प्रकार

Types of Karma according to Vaidik Texts

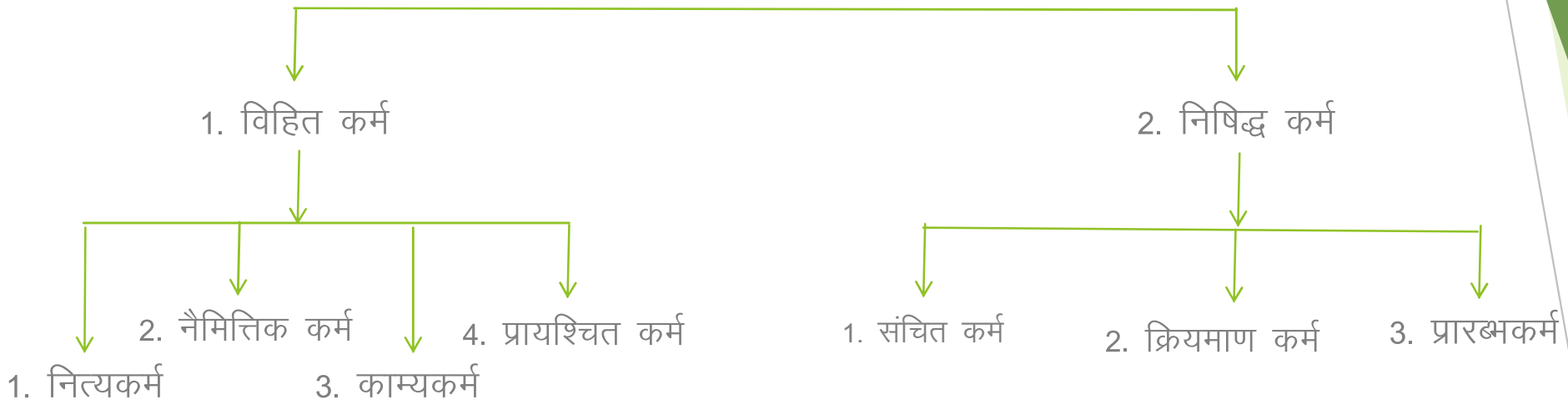

1. विहित कर्म : शास्त्र, स्मृति, आप्तपुरुष, ऋषियों द्वारा किये या बतलाये गये कर्म।

2. निषिद्ध कर्म : शास्त्र, स्मृति, आप्तपुरुष, ऋषियों आदि के विपरीत कर्म।

- नित्य : दैनकि कर्म।
- नैमित्तिक : किसी निमित्त के लिए होने वाले कर्म जैसे मुण्डन आदि संस्कार।
- काम्य : किसी कामना की पूर्ति के उद्देश्य से होने वाले कर्म।
- प्रायश्चितः पाप या दोष त्रुटि हेतु। जैसे उपवास, तप आदि।
- संचित : चित्त में किये गये कर्मों के संचित संस्कार।
- क्रियमाण : क्रियान्वित कर्म।
- प्रारब्ध : संचित कर्म कर्मफल बनकर अगामी दिनों में जब अभिव्यक्त होते हैं, तो वे प्रारब्ध कर्म कहलाते हैं।

गीता के अनुसार कर्म के प्रकार

Types of Karma according to Geeta

1. कर्म
2. विकर्म
3. अकर्म

कर्म : मानव धर्म एवं शास्त्र सम्मत कर्म

विकर्म : मानव धर्म एवं शास्त्र विपरीत कर्म।

अकर्म : इसके अन्तर्गत उपरोक्त दोनों प्रकार के कर्म हो सकते हैं। निम्नप्रकृति के कर्म अकर्म कहलाते हैं।

अनासक्त भाव से किया गर्या कर्म।

ऐसे कर्म जिसके अन्तःकरण में किसी भी प्रकार के संस्कार न बनते हो।

योग दर्शन के अनुसार कर्म के प्रकार

Types of Karma according to Yogadarshan

1. शुक्लकर्म
2. कृष्णकर्म
3. शुक्लकृष्ण कर्म
4. अशुक्ल अकृष्ण कर्म

शुक्लकर्म : पुण्यकर्म

कृष्णकर्म : पाप कर्म

शुक्लकृष्णकर्म : पुण्यपाप मिश्रित कर्म

अशुक्ल अकृष्ण कर्म: योगियों के कर्म

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR
आरोह तमसो ज्योतिः

धन्यवाद